दोनों कार्यों को करने के लिए स्वतन्त्र है। यह मत विश्वातीत ईश्वरवाद, जीवात्मी ईश्वरवाद का है। परन्तु इससे समस्या के एक ही भाग का समाधान होता है। क्योंकि प्राकृतिक और नैतिक अशुभ में अन्तर नैतिक अशुभ का कारण मनुष्य की स्वतन्त्रता है यद्यपि वह भी कल्याणकारी और सर्वशक्तिमान ईश्वर की अवधारणा के विरुद्ध है। किन्तु प्राकृतिक अशुभ के अन्तर्गत बाढ़, सूखा आदि मनुष्य के जीवन में घटित होते हैं।

(स) ईश्वर का शुभ हमसे भिन्न है। इस मत के अनुसार जो हमें अशुभ लगता है वह सर्वोच्चता के दृष्टिकोण से वास्तव में शुभ है। और ईश्वर के लिए भी शुभ है।

समीक्षा

अतः स्पष्ट होता है कि अशुभ का पूर्ण निषेध और पूर्ण स्वीकरण दोनो में ही कठिनाई है। वस्तुतः जगत में अशुभ है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता क्योंकि वह अनुभव का विषय है। परन्तु अशुभ शाश्वत नहीं है अन्यथा हम एक निराशावादी दर्शन तक पहुँचते हैं। वास्तव में अशुभ की सत्ता भौतिक, जैविक और मानसिक स्तर पर मानना अधिक समीचीन होगा। सभी मतों में यही मत मानना अधिक तर्कसंगत है कि अशुभ का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व के साथ सुसंगत है। ईश्वर ने अशुभ को इस-लिए उत्पन्न किया है कि जीव उससे संघर्ष करके आत्मा का विकास कर सके।